IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# सरकारी और गैरसरकारी संस्ताओ में कार्यरत महिलाओं की स्थिति ।

**[1]Mr. Raj Kamal Verma**

[1]Assistant Professor

[1]Department of Sociology,

[1]Majdoor Kishan College, Panki, Jharkhand, India

**अमूर्त:** भारत में सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की स्थिति को लेकर विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हालांकि, कुछ सकारात्मक बदलाव भी हुए हैं जो उनकी स्थिति में सुधार करने में मदद करते हैं। सरकारी संस्थाओं में, महिलाओं को समान वेतन और नौकरी के मुद्दों में समान अधिकार दिए जाने चाहिए। नौकरी के दौरान, उन्हें सुरक्षा और समर्थन के लिए सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। सरकारी नौकरियों में, महिलाओं के लिए स्पष्ट अनुकूलता नीतियां और विशेष अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। गैरसरकारी संस्थाओं में, महिलाओं को समान वेतन और नौकरी के मुद्दों में समान अधिकार मिलने चाहिए। इन संस्थाओं में, महिलाओं को उनके कौशल और योगदान के आधार पर चयन किया जाना चाहिए। वे समर्थन और सुरक्षा के लिए भी सुविधाएं प्राप्त करने चाहिए। इन सभी संस्थाओं में, महिलाओं को स्वतंत्रता और समानता के लिए समर्थन और संरक्षण दिया जाना चाहिए।

***कीवर्ड:*** *महिलाओं, सरकारी, गैरसरकारी, कार्यरत,स्थिति*।

## I. प्रस्तावना

भारत में सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की स्थिति का विस्तृत विश्लेषण करने से पहले, हमें उन उपलब्ध आंकड़ों का विवेचन करना होगा जो महिलाओं की रोजगार में भागीदारी के संबंध में हैं। भारत में महिलाओं की रोजगार में भागीदारी कम है। कुल जनसंख्या के साथ ही, महिलाओं की जनसंख्या अधिक होने के बावजूद, वे रोजगार में अल्पतम होती हैं। सामान्यतः, सरकारी नौकरियों में महिलाओं की संख्या कम होती है जबकि गैरसरकारी संस्थाओं में महिलाओं की संख्या कुछ अधिक होती है, लेकिन यह भी बहुत कम है। इन संस्थाओं में काम करने वाली महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे समान वेतन नहीं पातीं और प्रोत्साहन भी कम मिलता है। इसके अलावा, कुछ संस्थाओं में महिलाओं को असुरक्षित महसूस करना पड़ता है और अनुचित शोषण का सामना करना पड़ता है। भारत सरकार ने कुछ समाधान पेश किए हैं जो महिलाओं को संबोधित करते हैं। महिलगैरसरकारी संस्थाओं में, महिलाओं को समान वेतन और नौकरी के मुद्दों में समान अधिकार मिलने चाहिए। इन संस्थाओं में, महिलाओं को उनके कौशल और योगदान के आधार पर चयन किया जाना चाहिए। वे समर्थन और सुरक्षा के लिए भी सुविधाएं प्राप्त करने चाहिए। इन सभी संस्थाओं में, महिलाओं को स्वतंत्रता और समानता के लिए समर्थन और संरक्षण दिया जाना चाहिए।

## II. भारत सरकार के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति

भारत सरकार के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति भी स्थिर नहीं है। भारतीय शासन के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति अस्थिर बनी हुई है, क्योंकि उन्हें लोकसभा और राज्यसभा जैसी महत्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।हालाँकि भारत सरकार ने नौकरी के अवसरों के मामले में महिलाओं की पूरी तरह से अवहेलना नहीं की है, फिर भी उन्हें सत्ता के उच्च पदों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

सरकार के दायरे में महिलाओं के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने के लिए, सरकार ने महिलाओं के लिए पदों को आरक्षित करने, महिलाओं को प्रमुख पदों पर नियुक्त करने और पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान मुआवजा सुनिश्चित करने जैसे कई उपायों को लागू किया है। इन कार्रवाइयों का उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना है कि महिलाओं की पुरुषों के समान राजनीतिक और प्रशासनिक भूमिकाओं तक पहुंच हो। अधिक समान खेल मैदान बनाकर, सरकार एक अधिक समावेशी और विविध कार्यबल बनाने की उम्मीद करती है जो बड़ी आबादी की जरूरतों और आकांक्षाओं को बेहतर ढंग से दर्शाती है। इन प्रयासों का उद्देश्य महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने और देश के विकास में योगदान देने के लिए सशक्त बनाना है। कुल मिलाकर, सरकार की पहल सार्वजनिक क्षेत्र में लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय की चल रही खोज में एक सकारात्मक कदम का प्रतिनिधित्व करती है।भारत में, ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जहां महिलाओं को सत्ता के महत्वपूर्ण पदों पर तेजी से नियुक्त किया गया है। इन उदाहरणों में महिला आयोग, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ, महिला पुलिस बल का कार्यान्वयन, और महिला न्यायाधीशों और वकीलों की संख्या में वृद्धि शामिल हैं।प्रगति के बावजूद, भारत में ऐसी कई चुनौतियाँ हैं जो सरकारी क्षेत्र में करियर बनाने की महिलाओं की क्षमता को बाधित करती हैं। ऐसा ही एक मुद्दा घरेलू जिम्मेदारियों के अनुपातहीन बोझ के साथ-साथ समय पर नौकरी के अवसरों की कमी है।

## III. सरकारी संस्ताओ में कार्यरत महिलाओं की स्थिति

भारत में सरकारी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी कुछ चुनौतियां हैं जो इस समूह के सामने हैं। कुछ मुख्य चुनौतियों में से एक यह है कि महिलाएं अपने परिवार और नौकरी के बीच संतुलन बनाने में कई बार कठिनाइयों का सामना करती हैं। इसके अलावा, कुछ महिलाएं स्थानीय संसाधनों के अभाव के कारण नौकरी नहीं कर पाती हैं। अधिकांश महिलाओं को नौकरी में समान वेतन नहीं मिलता है और कई बार वे नौकरी से अलग करने के बाद भी नियोक्ता के प्रति या समाज में स्थिति के कारण उन्हें नकारा जाता है। दूसरी चुनौती यह है कि महिलाओं को अक्सर पुरुषों की तुलना में कम अवसर मिलते हैं। इससे कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाने में देरी होती है और उन्हें उनके योगदान और कौशल के आधार पर नहीं चुना जाता है।

सरकारी संस्थानों में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कुछ विशेष योजनाएं शुरू की गई हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं निम्नलिखित हैं: महिलाओं के लिए आरक्षण: सरकारी नौकरियों में महिलाओं के लिए आरक्षण प्रदान किया जाता है। इसके अंतर्गत, कुछ पदों पर महिलाओं को प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जाता है। महिलाओं के लिए सुविधाएं: कुछ सरकारी संस्थान नौकरियों में महिलाओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान करते हैं जैसे कि मातृत्व सुविधाएं, क्रीच सुविधाएं और अन्य समय-संबंधी सुविधाएं। समान वेतन और महिलाओं के लिए अधिक समानता: कुछ सरकारी संस्थानों में, समान कार्य के लिए महिलाओं को समान वेतन प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, कुछ संस्थानों ने महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक समानता प्रदान करने के लिए नीतियों को संशोधित किया है।

## IV. गैरसरकारी संस्ताओ में कार्यरत महिलाओं की स्थिति

भारत में गैरसरकारी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की स्थिति अनुभवों के अनुसार भिन्न हो सकती है। जिन संस्थाओं में महिलाएं अधिक हैं, वहां महिलाओं को अधिक समर्थन और सुरक्षा की व्यवस्था की जाती है। उन्हें उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं को समझा जाता है और उन्हें नौकरी में बढ़ावा देने के लिए उन्हें विशेष कौशल विकसित करने के लिए उनके लिए विशेष प्रशिक्षण भी दिया जाता है। हालांकि, कुछ गैर-सरकारी संस्थानों में महिलाओं को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें समान वेतन नहीं मिलता है और उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाता है या अधिक चुनौतियों के सामना करना पड़ता है। महिलाएं अक्सर पुरुषों की तुलना में कम अवसर प्राप्त करती हैं और उन्हें विशेष प्रशिक्षण

और अन्य सुविधाएं की आवश्यकता होती है। इन सभी चुनौतियों के बावजूद, अंत में, गैरसरकारी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की स्थिति में अधिकतर सुधार देखा जाता है।

गैर-सरकारी संस्थानों में महिलाओं को कई बार स्थानांतरित किया जाता है और उन्हें समान वेतन और समान विकास के अवसर नहीं मिलते हैं। वे अक्सर में पुरुषों से कम वेतन पर काम करती हैं और उन्हें स्थायी स्थान नहीं मिलता है। यह उन्हें अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गैरसरकारी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए कुछ उपाय हो सकते हैं, जैसे कि: समान वेतन की व्यवस्था करना: संस्थान के सभी कर्मचारियों के लिए समान वेतन की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे महिलाओं को पुरुषों से अलग नहीं किया जाता है। नौकरी के अवसर: संस्थान में महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर उपलब्ध कराना चाहिए। यह उन्हें अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए सहायता कर सकता है।

व्यवसाय और उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति विविध परिस्थितियों और अनुभवों की विशेषता है। भारतीय संदर्भ में, इस परिदृश्य को कई बाधाओं से चिह्नित किया गया है जिन्हें महिलाओं को इस क्षेत्र में सफल होने के लिए नेविगेट करना होगा।कई कंपनियों में कार्यरत महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। हालाँकि, उनके पद अधिकारियों और अधिकारियों के अधीनस्थ होते हैं। आमतौर पर, उन्हें अस्थायी या प्रशिक्षु आधार पर काम पर रखा जाता है और घरेलू कर्तव्यों के साथ काम सौंपा जाता है।कई महिलाओं के लिए, घरेलू जिम्मेदारियों और सीमित समय के बीच संतुलन साधने की चुनौती काम करना कठिन बना देती है। इसके अलावा, मार्गदर्शन और समर्थन की कमी उनके करियर में उनकी उन्नति को बाधित कर सकती है।यद्यपि कार्यबल में लैंगिक असमानता एक मुद्दा बनी हुई है, फिर भी कुछ कंपनियां ऐसी हैं जिन्होंने विशेष रूप से महिलाओं के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने वाले कार्यक्रम बनाने की पहल की है। इन कार्यक्रमों में आम तौर पर उचित वेतन, लचीले काम के घंटे, व्यापक लाभ पैकेज और मेंटरशिप के अवसर जैसे उपाय शामिल होते हैं जो महिलाओं को अपने करियर में आगे बढ़ने में सक्षम बनाते हैं।

## V. कार्यरत महिलाओं सामजिक स्थिति

कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति बदलती हुई है, लेकिन इसमें अभी भी काफी कठिनाइयां हैं। कुछ मुख्य समस्याएं निम्नलिखित हैं: भुगतान में असमानता: बहुत सारी कंपनियों में महिलाओं को मानदेय में असमानता का सामना करना पड़ता है। उन्हें महिला समूह के सदस्यों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है। जेंडर विभेद: महिलाओं को कुछ जगहों पर अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में कम सम्मान दिया जाता है। उन्हें अधिकार दिलाने में भी कई बार मुश्किलें आती हैं। बाल मजदूरी: कुछ महिलाएं शिक्षा प्राप्त करने से रोक दी जाती हैं और उन्हें घर में काम करने के लिए मजदूरी मिलती है। समय-संबंधी मुद्दे: कई महिलाएं अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए कम समय निकाल पाती हैं। इससे वे अपनी करियर के लिए ज्यादा समय नहीं निकाल पाती हैं।

भारत में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में काम करने वाली महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार होने के बावजूद अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।कुछ प्रमुख चुनौतियों में से एक यह है कि महिलाओं को अपने परिवार और नौकरी के बीच संतुलन बनाने में कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, कुछ महिलाएं स्थानीय संसाधनों की कमी के कारण नौकरी नहीं कर सकती हैं। अधिकांश महिलाओं को नौकरी में समान वेतन नहीं मिलता है और कई बार वे नौकरी से अलग होने के बाद भी नियोक्ता के प्रति या समाज में स्थिति के कारण उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है।दूसरा चुनौती यह है कि महिलाओं को अक्सर पुरुषों की तुलना में कम अवसर मिलते हैं। इससे कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि में देरी होती है और उन्हें उनके योगदान और कौशल के आधार पर नहीं चुना जाता है।इन चुनौतियों के अलावा, महिलाओं को नियोक्ताओं द्वारा समर्थन और सुरक्षा का भी अधिक महत्व है।

## VI. कार्यरत महिलाओं आर्थिक स्थिति

कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति देश के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। कुछ महिलाएं उच्च वेतन वाले पदों पर होती हैं जबकि कुछ कम वेतन वाली नौकरियों में होती हैं। भारत में, कुछ महिलाओं को उच्च वेतन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ मिलता है, जैसे कि सरकारी नौकरियों में होने पर। लेकिन, बहुत सारी महिलाएं कम वेतन वाली नौकरियों में होती हैं जहाँ वे अधिक आर्थिक समस्याओं का सामना कर सकती हैं। कुछ महिलाएं घर से काम करने का विकल्प चुनती हैं जिससे वे अपने परिवार की देखभाल भी कर पाती हैं। इससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं लेकिन इसके साथ ही उन्हें उनकी कार्य जगह के बाहर नियमित काम करने वाले कर्मचारियों के तुलना में कम वेतन मिलता है। अंत में, यह

निर्भर करता है कि कोई महिला कौन सी नौकरी कर रही है और उसकी क्षमताओं और योग्यता के आधार पर उसे कितना वेतन मिल रहा है।

भारत में, सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति विभिन्न होती है। सरकारी संस्थानों में काम करने वाली महिलाएं अक्सर अधिक वेतन पाती हैं जो उन्हें आर्थिक सुरक्षा का संभवतः सर्वाधिक स्तर उपलब्ध कराता है। सरकारी सेक्टर में महिलाओं के लिए विभिन्न सुविधाएं भी होती हैं, जैसे कि मातृत्व अवकाश, छुट्टी, और अन्य आरक्षण। गैर-सरकारी संस्थानों में, महिलाएं अक्सर कम वेतन वाली नौकरियों में होती हैं। वे बढ़िया कौशल वाले काम भी करती हैं, लेकिन वेतन संबंधी मुद्दों के लिए इससे कम प्रतिक्रिया मिलती है। इसलिए, आर्थिक रूप से, सरकारी संस्थानों में काम करने वाली महिलाएं गैर-सरकारी संस्थानों में काम करने वाली महिलाओं से अधिक लाभान्वित होती हैं। हालांकि, दोनों सेक्टरों में महिलाओं को अधिक संरचित कार्यकलाप और आर्थिक सुरक्षा के लिए व्यवस्थाएं चाहिए।

## VII. कार्यरत महिलाओं राजनैतिक स्थिति

भारत में कार्यरत महिलाओं की राजनैतिक स्थिति अधिकतर संसद और विधानसभा में कम होती है। यहां तक कि भारत की सांसदों में महिला उपस्थिति का औसत भी बहुत कम है। हालांकि, वर्तमान में स्त्री आयोग जैसी संस्थाएं हैं जो महिलाओं के राजनैतिक अधिकारों को संरक्षित करती हैं। संविधान में भी महिलाओं के अधिकारों का संरक्षण किया गया है जिसमें उनके निर्धारित आरक्षण, जाति और लिंग के आधार पर विभिन्न सभाओं और निकायों में प्रवेश दिया गया है। इसके अलावा, कुछ राज्यों में महिलाओं के लिए विशेष आरक्षण भी है जो उन्हें राजनीतिक उठापटक बढ़ाने में मदद करता है। इन सभी पहलों के बावजूद, अभी भी बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि महिलाओं के उत्पीड़न, उनके न्याय और अधिकारों का उल्लंघन आदि। संक्षेप में, भारत में कार्यरत महिलाओं की राजनैतिक स्थिति अभी भी कमजोर है।

भारत में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की राजनैतिक स्थिति उनके पुरुष समकक्षों के मुकाबले कम होती है। भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकारों का संरक्षण है जिसके तहत वे निकायों में प्रवेश और निर्देशक मंडलों में शामिल हो सकती हैं। सरकारी संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था है, जो उन्हें उच्च स्तर की नौकरियों में प्रवेश करने में मदद करती है। भारत में एक स्त्री आयोग भी है जो महिलाओं के लिए संरक्षण की व्यवस्था करती है। इसके अलावा, कुछ राज्यों में निर्देशक मंडलों में महिलाओं के लिए आरक्षण की भी व्यवस्था है। गैर-सरकारी संस्थाओं में महिलाओं की राजनैतिक स्थिति अधिक निर्भर करती है, क्योंकि उन्हें सीधे चुनावों में भाग लेने का मौका मिलता है। महिलाओं को गैर-सरकारी संस्थाओं में उच्च स्तर के पदों पर नहीं रखा जाता है, लेकिन वे अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती है।

## VIII. निष्कर्ष

भारत में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति उनके पुरुष समकक्षों से कम होती है।

सामाजिक दृष्टिकोण से, महिलाओं को घरेलू कामों और पारिवारिक जिम्मेदारियों का संभालना पड़ता है जिसके कारण वे काम और परिवार के बीच अंतर के शिकार हो जाती हैं। इसके अलावा, कुछ संस्थानों में महिलाओं को असामान्य और अपराधी नजर से देखा जाता है जो उनकी समाज में मान-सम्मान को प्रभावित करता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से, महिलाओं की वेतन अधिकतर पुरुषों की तुलना में कम होती है। सरकारी संस्थानों में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था है, लेकिन गैर-सरकारी संस्थानों में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं होती है।
राजनैतिक दृष्टिकोण से, सरकारी संस्थानों में महिलाओं की राजनैतिक स्थिति अधिक होती है जबकि गैर-सरकारी संस्थानों में उनकी राजनैतिक स्थिति कम होती है। महिलाओं को गैर-सरकारी संस्थानों में उच स्तर के पदों पर पहुंचने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, गैर-सरकारी संस्थानों में महिलाओं को उनकी सुरक्षा का भी ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि कुछ संस्थाओं में महिलाओं के साथ संबंधित अत्याचार की शिकायतें भी आती हैं।

समाज में महिलाओं के समान अधिकारों की गहरी नींव नहीं होने के कारण, सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति में सुधार की जरूरत है। महिलाओं को उच्च पदों तक पहुंचने में बाधाएं होती हैं और उन्हें उच्च वेतन नहीं मिलता है। समाज में लोगों के मानसिक विकलांगता के कारण महिलाओं के प्रति अधिकारों की गहरी नींव नहीं है। सरकार को अधिक महिलाओं को राजनीति में शामिल करने के लिए नीतियों और योजनाओं को बनाने चाहिए और महिलाओं को उनकी भूमिका में समर्थन देना चाहिए। इन सभी मुद्दों को हल करने के लिए सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं सहयोग कर सकती हैं।

## IX. संदर्भ

**[1]** संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) - "सार्वजनिक प्रशासन और सार्वजनिक सेवा में जेंडर समानता": इस रिपोर्ट में सरकारी संगठनों में जेंडर समानता और सार्वजनिक प्रशासन में महिलाओं की भूमिका के बारे में जानकारी दी गई है। आप इसे UNDP वेबसाइट पर देख सकते हैं।

**[2]** विश्व बैंक - "महिलाएं, व्यापार और कानून": इस रिपोर्ट में दुनिया भर में महिलाओं के आर्थिक भागीदारी और उद्यमिता को प्रभावित करने वाले कानूनी बाधाएं और विधियों का अध्ययन किया गया है। इसे विश्व बैंक की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

**[3]** अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) - "काम पर महिलाएं की ट्रेंड्स": ILO नियमित रूप से महिलाओं की रोजगार और श्रम बाजार की ट्रेंड्स पर रिपोर्ट प्रकाशित करता है। आप उनकी वेबसाइट पर संबंधित रिपोर्ट्स देख सकते हैं।

**[4]** प्यू रिसर्च सेंटर - "ग्लोबल जेंडर गैप": प्यू रिसर्च सेंटर विभिन्न पहलुओं में जेंडर गैप के डेटा और विश्लेषण प्रदान करता है, जैसे कि राजनीति और रोजगार। इनकी वेबसाइट पर संबंधित रिपोर्ट्स की जाँच करें।

**[5]** विश्व आर्थिक मंच (WEF) - "ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट": विश्व आर्थिक मंच (WEF) नियमित रूप से दुनियाभर में जेंडर गैप की रिपोर्ट प्रकाशित करता है। इसे उनकी वेबसाइट पर देख सकते हैं।